संत महाकवि श्री कृष्ण जू राजदान

की हिंदी भक्ति साहित्य को देन

संत महाकवि
श्री कृष्ण जू राजदान
की
हिन्दी भक्ति साहित्य को देन

डॉ. मथुरादत्त पाण्डेय

आवरण पृष्ठ

श्री वीर मुंशी द्वारा श्री कृष्ण जू राजदान का चित्र

प्रकाशक

स्वामी कृष्ण जू राजदान

सनातन धर्म सत्संग भवन

गंगा नगर, वन-तालाब, जम्मूतवी-181123

मुल्य 20/- रुपये

संक्षिप्त परिचय
श्री कृष्ण जू राजदान

भक्त कवि मीरा, कबीर, तुकाराम, नरसिंह मैहत्ता और तुलसीदास की तरह कश्मीर के जनमानस को गहराई तक प्रभावित करने वाले संत महाकवि श्री कृष्ण जू राजदान का जन्म कश्मीर घाटी के छोटे से गांव वनपूह में 19 अगस्त, 1850 को हुआ था। यह गांव जम्मू-श्रीनगर राजमार्ग पर अंनतनाग से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इनके पिता श्री गणेश जू रैणा (राजदान) एक समृद्ध जमींदार थे। उन्होंने बालक कृष्ण को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रयास किया। इन्हें फारसी, संस्कृत और गणित पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षक नियुक्त किए गए। ज्योतिष शास्त्र पढ़ाने के लिए एक ज्योतिषी को भी नियुक्त किया गया। बचपन से ही इनमें भक्ति भावना कूट-कूट कर-भरी हुई थी। कहा जाता है कि एक बार इनके माता-पिता ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के दिन मंजगांव स्थित राज्ञिन्य भवानी के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पर दर्शनों के लिए गए। चूंकि बालक कृष्ण बहुत छोटे थे और उनके साथ 15 मील की कठिन पैदल यात्रा करनी संभव नहीं थी अतः वे उन्हें घर पर ही चुपचाप छोड़ गए। जब बालक कृष्ण को इस बात का पता चला तो वे बहुत रोए क्योंकि उनकी भी देवी माँ के दर्शनों की प्रबल इच्छा थी। उस दिन उन्होंने कोई भी अन्नजल ग्रहण नहीं किया। सारा-दिन रोते रहे तथा रोते-रोते ही गहन निद्रा में सो गए। उसी समय उनके साथ एक चमत्कार हुआ। स्वप्न में उन्हें देवी माँ ने ममतामयी दिव्य स्त्री के रूप में दर्शन दिए। देवी माँ ने बालक कृष्ण के सिर पर स्नेह से हाथ रखा, सहलाया, गोदी में उठाया और बहुत प्रेम किया। उन्होंने बालक कृष्ण से कहा, "तुम्हारी मेरे पास आने की बहुत इच्छा थी। अब मैं स्वंय तुमसे

मिलने तुम्हारे पास आ गई हूँ इसलिए रोना बंद कर दो।" देवी माँ ने बालक कृष्ण के मुंह में खीर डाली। खीर डालते ही बालक कृष्ण की आँखें खुल गईं। आँख खुलने पर कृष्ण ने देखा कि वह ममतामयी देवी गायब थी परन्तु खीर का स्वाद अभी भी उसके होठों पर था। राज्ञिन्या माँ के हाथ से खाई इस खीर से बालक कृष्ण की जीह्वा पर सरस्वती विराजमान हो गई और उनके मुख से काव्य धारा बहने लगी। उनके मुख से प्रस्फुटित प्रथम भक्ति रचना इस प्रकार है:

मंजगमि छख चुंय रागन्या भवानी,
परम पदवी छय चान्य जानिए।

इसके बाद बालक कृष्ण धीरे-धीरे कश्मीर के प्रसिद्ध संत महाकवि कृष्ण जू राजदान हो गए।

जम्मू-कश्मीर के महाराजा रामबीर सिंह के दरबार में विख्यात विद्धान संत मुखोपाध्याय पंडित मुकुंदराम शास्त्री राजपंडित थे। श्री कृष्ण जू राजदान जब कश्मीर गए तो उन्होंने इन विद्धान संत पंडित को अपना गुरू मान लिया। अपने गुरू के मार्गदर्शन में श्री कृष्ण जू राजदान अध्यात्म के शिखर पर पंहुच गए। आध्यात्मिक आंनद की रसधारा उनके भक्ति काव्य के रूप में प्रवाहित होने लगी। इस भक्ति रसधारा ने धीरे-धीरे सारे कश्मीर को भिगो दिया।

श्री कृष्ण जू राजदान एक गृहस्थ संत कवि थे। उनका विवाह व्यस्सु गांव के श्री दयाराम कौल जी की सुपुत्री सुश्री अरनिमाल से हुआ था। व्यवसाय से श्री राजदान अपने गांव के नम्बरदार (राजस्व अधिकारी) थे। श्री राजदान जी ने 23 नबम्बर, 1925 को अपने गांव में ही अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण की।

श्री कृष्ण जू राजदान कश्मीरी भक्ति और लीला काव्य के प्रतिनिधि संत कवि हैं। यद्यपि देवी भवानी के दर्शन और वरदान के बाद वे कवि बने लेकिन कश्मीर शिव भक्ति का केन्द्र होने के कारण वे बाद में प्रखण्ड शिव उपासक हो गए। उनकी प्रतिनिधि भक्ति रचनाएँ 'शिव परिणय' और 'शिव लगन' शिव-पार्वती के प्रेम, विरह और विवाह से संबंधित हैं।

इनकी रचनाएं ज्ञान और भक्ति प्रधान होने के साथ-साथ संगीतमयी भी हैं। उनके एक शिष्य श्री कंठराम शराबी द्वारा गाई गई कविताएं काफी लोकप्रिय हुई हैं। रेडियो पर प्रसारित इनके भक्ति पद भी कश्मीर में काफी प्रसिद्ध हुए हैं। वास्तव में इनकी अलग संगीतमयी शैली इन्हें अन्य कश्मीरी भक्त कवियों से अलग एवं विशिष्ट स्थान प्रदान करके एक गीतकार के रूप में भी स्थापित करती है।

श्री कृष्ण जू राजदान संस्कृत और कश्मीरी भाषा के विद्धान थे। लेकिन उन्होंने इसके साथ-साथ हिन्दी और फारसी में भी रचनाएं की हैं। देवनागरी में उनकी रचनाएँ 'शिव लगन', 'कृष्ण वाणी' व 'कृष्ण दर्शन' हैं। 'शिव लगन', राजदान साहब की एक श्रेष्ठतम अमर कृति है जिसमें उन्होंने शिव व कृष्ण दोनों के प्रति भक्तिपूर्ण पद निवेदित किए हैं। वे शिव और कृष्ण को एक ही परमसत्ता के दो रूप मानते हैं। श्री कृष्ण जू शाक्तमत, वेदांत, भागवत, महाभारत, रामायण व अन्य शास्त्रों के विद्वान होने के कारण भारतीय समन्वयवाद के भी पोषक कवि हैं। वास्तव में उनकी भक्ति का आधार ही अद्वैतवाद है। उनकी दृष्टि में राम, कृष्ण, शिव, विष्णु और देवी एक ही परम सत्ता के विभिन्न रूप हैं।

श्री कृष्ण जू राजदान जी की रचनाएँ पहली बार रॉयल एसियॉटिक सोसाइटी, बंगाल द्वारा 1925 में प्रकाशित की गई थीं। उनकी कुछ रचनाएँ 'हरि़हर कल्याण' शीर्षक से भी प्रकाशित हुई हैं। श्री कृष्ण जू राजदान के पौत्र श्री श्याम लाल राजदान ने उनकी संपूर्ण रचनावली के तीन खण्ड 'शिव लगन', 'कृष्ण वाणी' व 'कृष्ण दर्शन' के शीर्षक से देवनागरी में प्रकाशित करवाए हैं। जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी द्वारा एक अन्य ग्रंथ 'श्री कृष्ण जू राजदान की संपूर्ण रचनावली' प्रकाशित किया गया है। इसका संकलन कश्मीर के प्रसिद्ध कवि श्री सोमनाथ वीर जी द्वारा किया गया है। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी विश्व कोश (खण्ड-2), 'इनसॉइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' के भारतीय संस्करण 'भारत ज्ञान कोश' (खण्ड-1) तथा ज्ञानमण्डल वाराणसी द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी साहित्यकोश' में भी इनका सादर उल्लेख किया गया है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित भारतीय साहित्य माला के अन्तर्गत भी इनकी रचनाओं के अनुवाद संकलित किए गए हैं।

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
717, सैक्टर 36-बी, चण्डीगढ़

श्रीकृष्ण जू महाराज की हिन्दी भक्ति साहित्य को देन

कवि की दृष्टि चौतरफा घूमती है। यह केवल एक दिशा की दासी नहीं। भक्त कवि तो लोकोत्तर स्थिति का भी साक्षात्कार कर लेते हैं। यही कारण है कि कट्टर साधकों से भक्त साधक मेल नहीं खा पाते। खुला आकाश, खुला दिल और उन्मुक्त विचरण उनका सहज जीवन है। आलोचक उनको किसी धारा में तैराने का प्रयत्न करते तो हैं, किन्तु वे अपने प्रयत्न में अंशतः ही सफल हो पाते हैं। मूलतः कश्मीरी के भक्त कवि कृष्ण जू महाराज के विषय में भी 'इदमित्थं' कहना कठिन है। वे शिव-भक्त हैं – इसमें सन्देह नहीं; किन्तु उन्हें कृष्ण-भक्त या राम-भक्त न मानना या कम मानना भी असङ्गत है। लीला-काव्य की रचना में वे अपेक्षाकृत कृष्णभक्त अधिक दिखाई देते हैं। आज हम उनकी हिन्दी रचनाओं को लेकर ही कुछ चर्चा करना चाहेंगे। "अरे किस राजा की राजकुमारी किस पर लगा तेरा दिल" इस भजन में जब हम निम्न पंक्तियों को पढ़ते हैं तो भगवान् शंकर का स्पष्ट चित्र सामने आ जाता है:

पी पी के गाँजा आँखें जो फेरता
डरता है उससे यम और काल
घर अपने जाओ तू समझो मेरा
किस पर लगा तेरा दिल

इसी भजन में वे आगे लिखते हैं :-

राम राम करके आसन बिछाओ
श्याम रूप का मन में लगाओ ध्यान॥

कृष्ण जू महाराज की दृष्टि में राम-श्याम-शिव में कोई भेद नहीं है। ये परम पुरुष ईश्वर के ही विशिष्ट नाम है। गोस्वामी तुलसी दास ने

शिव के मुँह से राम-कथा कहलवाई है तो राम द्वारा भी शिव की पूजा करवाई है। शिव और राम कम-अधिक नहीं, एक कक्षा-स्थित हैं:

शंकर-प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहहिं कल्प भरि, घोर नरक मँह वास।।

ठीक यही बातें कृष्ण जू की स्तुतियों में पाई जाती हैं। भगवान् विष्णु शिव की स्तुति करते हुए कहते हैं;

मन में चिन्तन करता रहूँगा, शिव-चरणों का करूँगा मैं ध्यान।
फूलों से अरघ्यों से माथे पै तेरे, चंदन का तिलक लगाऊँ रे।।

और शिव वेष बदलकर श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए वृन्दावन चले जाते हैं।

कश्मीर में यद्यपि प्रत्यभिज्ञा दर्शन वाले शैव मत का प्राधान्य होने के कारण कृष्ण जू महाराज के हिन्दी भजनों में भी शिव-परक स्तुतियों का आधिक्य है; किन्तु कृष्णभक्तिपरक स्तुतियों और भजनों में जो भाव-तीव्रता देखी जाती है, वह शिवभक्ति भजनों में नहीं पाई जाती। अतः गुणवत्ता की दृष्टि से कृष्णभक्ति का स्वरूप न्यून नहीं; अपितु कहीं वह पराकाष्ठा पर पहुँची दिखाई देती है।

टिक-टिकी बाँधकर आँखें रखो श्री कृष्ण चन्द्र के ध्यान में।
कहाँ चलिया तुम हमको छोड़कर श्री कृष्ण ऐसे हाल में।।

कृष्ण चन्द्र हैं, आँखें चकोर हैं, वे टिक-टिकी बाँध कर देख रहे हैं, देह की परवाह नहीं है। भक्त की अनन्यता भरी शिकायत है कि वह श्रीकृष्ण चन्द्र उन्हें छोड़ कर कहाँ जा रहा है। कृष्ण जू महाराज के इस उलाहने में गोस्वामी तुलसी दास की उक्ति की छाया प्रतिबिम्बित है:

बरसि परुष पाहन पयद, पंख करे टुक टूक।
तुलसी परी न चाहिए, चतुर चातकहि चूक।।

वहाँ ओले बरसाकर विदा होते हुए बादल पर अन्योक्ति कसी गई है; यहाँ श्रीकृष्ण रूपी चाँद पर। चातक और चकोर आश्रयगत-एक-पक्षीय प्रेमोन्मादी भक्त हैं।

कृष्ण जू श्रीकृष्ण को एक उज्ज्वल सितारा मानते हैं जिसके उदित होने पर वृन्दावन वैकुण्ठ बन गया :-

कृष्ण चन्द्र उज्ज्वल रोशन, सितारा हो तो ऐसा हो।
हुआ वैकुण्ठ वृन्दावन, जो नन्दन हो तो ऐसा हो।।

राम का गुणगान यद्यपि कम हुआ है, किन्तु भक्ति-भावंना कृष्ण जू की उनके प्रति भी कम नहीं। उनकी दृष्टि में राम परात्पर भगवान् है।

ब्रह्म ने राम जी के तन में अपनां जलवा दिखाया है।
विला शक राम जी में कुदरते कामिल हुवैयदा है।।

शिव कृष्ण जू महाराज के परम आराध्य है। उसका कारण है कि कश्मीर वासियों की मान्यता के कारण शिव वहाँ के प्रधान देवता हैं और कृष्ण जू कश्मीर से जुड़े हैं। जन्मभूमि है अतः भले ही उनकी व्यापक दृष्टि में कृष्णादि विष्णु के अवतार और शिव के देवत्व में छोटे-बड़े का भेद नहीं है; तो भी शिव-भक्ति पर उन्होंने सर्वाधिक लिखा। वे लिखते हैं कृष्ण को बुलाया जाय --- कश्मीर की समस्या सुलझाने के लिए और कश्मीर को ही वृन्दावन समझकर वहाँ वसने के लिए कहें:

वृन्दावन सै उत्तम पाइये
गिरिजा का घर है कश्मीर देश।

उत्तर वाहिनी गंगा में नहाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

कश्मीरियों को कहर से बचाइये
'कृष्ण' के मिटाइये संकट क्लेश।
अन्नपूर्णा का मुख दिखलाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

'काशी से कश्मीर मण्डल में आइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष'

इस भजन में यथार्थत: शंकर को जो सदा काशीवास करते हैं, कश्मीर आने का न्यौता दिया गया है; किन्तु समानभाव से श्रीकृष्ण को मानने वाले कृष्ण जू महाराज उन्हें भी लेने के लिए शंकर से वृन्दावन होकर आने को कहते हैं ताकि वहाँ से गोप-मण्डल के साथ श्री कृष्ण को साथ ला सकें।

प्रेम-भक्ति की धारा के प्रवाह में भाषा के किनारे टूट जाते हैं। भक्त मदमत्त होकर कुछ कहने लगता है और कुछ और ही ऊट-पटांग मुँह से निकल पड़ता है। हिन्दी सन्त कवि कबीर और नेपाली जोस्मनी संतकवि ज्ञान दिलदास की-सी मस्ती कृष्ण जू महाराज के भजनों में मिलती है।

सूरदास के भ्रमर गीत को एक ही भजन में पिरोकर रख दिया है कृष्णजू महाराज ने: जैसे राधा का विरह -

रोते रोते राधा कहती सुबह हुआ शाम
ना इधर ना उधर है फिर किधर है श्याम
पारा करके वस्त्रों को तन से छोडूँ प्राण
इस्त्री जोगन बनेगी फेंक दूँ सामान

नन्द नन्दन के लिए छोड़ों मैं नन्दन ग्राम
श्रीकृष्ण मथुरा गये हमसे लिया आराम

इन शब्दों में और गोपियों का विरह ---

वह है अब राजों का राजा हम है सब सुदाम।
हम गरीबों का वह लेवे अब न मुँह से नाम॥

और यशोदा का विरह इन शब्दों में ---

नूरे दीदा जाने से आँखें हुई बादाम।
श्रीकृष्ण मथुरा गये हमसे लिया आराम॥

कृष्णजू ने मानो सूरदास भजनावली का उपसंहार किया है। सुदामा बनकर कृष्णजू श्रीकृष्ण से उनकी दया की भीख माँगते हैं;

ना हम जोगी ना ब्रह्मचारी ज्ञान के नहीं अधिकारी
भक्ती देवो वह है सरदारी आयें तेरे दरबार में।
सबको दिया तूने सर्वा अधिकारी अब आ गई कृष्ण की बारी
देखो दया की उमीदवारी आये तेरे दरबार में॥

कितनी विलक्षणता से वे श्रीकृष्ण का ध्यान करते करते अपनी दुनियाबी दुर्दशा को दिखाते हैं

'कृष्ण तेरे ध्यान में बन गया बस्ती को बन।'

शैव दर्शन के प्रमुखतः दो व्यापक भेद हैं:-

1. दाक्षिणात्य 2. कश्मीरी। दक्षिण का शैव दर्शन द्वैत को लेकर चलता है और उसी में उसे अमृत तत्त्व मिल जाता है जिसका कारण सामरस्य है। यह सामरस्य सामान्य शैवदर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य है।

'प्राप्ते तु समरसानन्दे द्वैतमप्यमृतायते'

सामरस्य की सिद्धि होने पर द्वैत में भी अमृत मिल जाता है। काश्मीर के शैव दर्शन में यह सामरस्य सिद्ध होने पर शिव और जीव में कोई अन्तर नहीं रह जाता है जीव शिवोऽहं' कह कर आनन्द रूप हो जाता है। शिव अपनी परा शक्ति से सब कुछ करने, न करने और अन्यथा करने में समर्थ है। शिव और शक्ति में केवल नाम भेद है, उसी तरह जैसे चाँद और चाँदनी में।

चन्द्रमा द्वारा की गई शिव-स्तुति में कश्मीरी शैवागम का पूर्ण रूप वर्णित है:

जोगी में आप हैं सन्यासी में आप हैं
संसारी में आप हैं ब्रह्मचारी में आप हैं।
एक ही एक चारों वर्णों में है केवल,
है केवल है केवल जी॥

यह कैवल्य कश्मीरी शैवदर्शन का विभदेक या विशिष्ट तत्त्व है। समस्त देवताओं द्वारा जो शिव की स्तुति की गई है वह भी अद्वैत तत्त्व से परिपूर्ण है।

तुम ही मन प्राण, तुम ही चिन्ता
तुम ही ईश्वर और आत्मा।

पार्वती के समझावन में भी शैवागम का अद्वैत स्पष्ट झलक मारता है :-

तप साध के कर निर्मल मन
जाओ जाओ दण्डकवन
वही है शिवजी एक ही एक
एक को दो जानना नहीं है ठीक
कृष्ण जी उस केवल का रूप
हृदय में जानो जैसे दीप

आद्य शंकराचार्य के अद्वैत में जैसे माया जीव को द्वैत में लाकर पृथक् दिखलाती है और जीव जब माया-जवनिका को फाड़ डालता है तो स्वयं ब्रह्म बन जाता है। कश्मीरी शैवदर्शन में भी माया (शक्ति) वही काम करती है। माया को कृष्ण जू नींद बताते हैं जो हमें सपने दिखाती है। हम जो होते हैं, उससे भिन्न बन जाते हैं। नींद खुलते ही हम, हम ही बन जाते हैं।

माया की नींद से जागो जागो
भागो भागो काया से दूर

परमात्मा है अपने पास
हे कृष्ण जी तुम कर अन्यास।।

श्रीकृष्णजू महाराज के शिव-विषयक हिन्दी भजन शिव-सम्बन्धी प्रबन्धों का संक्षिप्तीकरण है। काव्यात्मक दृष्टि से शिव-विवाह की पूर्वपीठिका पार्वती की शिव-विषयक रति तथा शिव को प्राप्त करने के लिए तपस्या का विशेष महत्त्व है। इस विषय में उनकी कश्मीरी रचनायें तो सबसे अधिक आदृत समझनी चाहिए। हिन्दी भजन भी बड़े भाव-पूर्ण हैं:

अरे किस राजा की राजकुमारी!
किस पर लगा है तेरा दिल!

इस प्रश्नात्मक भजन में उत्तर-प्रत्युत्तर कल्पित कर कृष्ण जू महाराज ने जिस निश्छलता से व्याजनिन्दा के सहारे प्रभु शिव की महत्ता सिद्ध की है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

पत्थर से जिस तरह मिलता है सीना
उस तरह होना तुम्हारा उसके साथ,
समझ में आता है कर्मों का फेरा
किस पर लगा है तेरा दिल !

बिजली सी तू है चमकती दमकती
बादल का रखती है मन में हबस,
यही है प्रलय यही है अँधेरा
किस पर लगा है तेरा दिल !!

हिन्दी में पार्वती के शिव-विषयक प्रेम की परीक्षा के लिए तुलसीदास के पार्वती-मंगल की चर्चा है, जो संस्कृत काव्यों और पुराणों के आधार पर लिखा गया है; किन्तु कृष्ण जू महाराज ने इसी विषय को लेकर न केवल कश्मीरी में, अपितु हिन्दी में भी संकेत दिये हैं कि पार्वती शिव के बदले राम-श्याम को अनुराग-पात्र क्यों नहीं बनाती है:-

राम राम करके आसन बिछाओ
श्याम रूप का मन में लगाओ ध्यान
उस पास लक्ष्मी और माया का डेरा
किस पर लगा है तेरा दिल !!

शिव के बदले भगवान् विष्णु को वरण करने का प्रलोभन पार्वती को हिन्दी की उपभाषा नेपाली में पूर्ण प्रसाद खतिबड़ा के सत्तीछरिया में भी नारद द्वारा दिया गया है। नारद परीक्षा लेने विष्णु को वर रूप में सजाकर लाते हैं जब सखियाँ पार्वती को उसकी सूचना देती हैं तो पार्वती मर जाने की तैयारी करती है:-

हे साथीहरू हो म शम्भु प्रभु-सा पाऊँ पती भन्दछू
विष्णुलाइ दिया भन्या अब यहाँ हत्तेगरी मर्द छू।।

शैवों और वैष्णवों में जो द्वेष-भाव अर्द्धशिक्षित किंवा सम्प्रदायस्थ साधुओं में देखा जाता है उसे दूर करने का प्रयास जैसे अन्य हिन्दी कवियों द्वारा किया गया है वैसे ही कृष्ण जू महाराज द्वारा भी सम्पन्न हुआ है। तुलसी-दास भावमग्न होकर शिव द्वारा राम-कथा पार्वती को

सुनाते हैं और राम रामेश्वर की स्थापना कर घोषणा करते हैं:-

शंकर-प्रिय मम द्रोही शिवद्रोही मम दास।।
ते नर करहहिं कल्पभरि घोर नरक मँह वास।।

कृष्ण जू महाराज के विष्णु शिव की भावपूर्ण स्तुति करते हुए कहते हैं कि गृहस्थी हूँ साधु तो हूँ नहीं कि गाँजे का नशा कर सकूँ, ठंडाई पी सकूँ। मुझे तुम ध्यान की नशा भरी ठंडाई पिला दो। तुम्हारी चाहत मुझे कर्तव्य निभाने में राहत देती है। मैं मुरली में तुम्हारी लीला-गान करूँगा।

न हूँ साधु गांजे का नशा बनाओ
फँसा हूँ गृहस्थ के जंजाल में
अब मिलेगी ठंडाई और ध्यान का गांजा
बहुत चैन से आ पिलाओ रे

दिन रात तेरी है चाहत मुझको राहत है इस कर्म भूमि में
कृष्ण जी सुनेगा मुरली में लीला, मीठी ज़बान में सुनायो रे।।

मैथिल-कोकिल विद्यापति ने शिव को नर-नारी तथा नारायण-शूलपाणि के रूप में चित्रित कर शैवों और वैष्णवों के बीच एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया है।

शिव को महादेव देवाधिदेव आदि नामों से पुकार कर हिन्दी का शिव-भक्ति साहित्य उन्हें प्रधान देव तो मानता है; किन्तु हिन्दी कवियों ने उन्हें सभी देवताओं में अग्रणी के रूप नहीं दिखाया है। किन्तु कृष्ण जू महाराज के हिन्दी भजनों में भी शिव सर्वश्रेष्ठ देव हैं और सभी देव उनकी स्तुति करते हैं :-

तेरी माया शिवजी कब बुद्धि में आये
शिव, शिवजी कब आवे

विष्णु, ब्रह्मा, देवता और सरस्वती न पावे
ओम गंगाधारा जी संसार सारा।

ये पंक्तियाँ इन्द्र-कृत स्तुति की हैं' जिसमें सरस्वती-सहित विष्णु-ब्रह्मादि देवताओं को भी गंगाधर शिव-तत्त्व के रहस्य की जानकारी का न होना बताया है। और तो और चित्रगुप्त भी 'शिव का ध्यान अपने मन में लगाइये' कहकर शिव के देवत्व को सबसे अधिक सिद्ध करते हैं। चन्द्रमा अपनी स्तुति में केवल 'शिव को मानकर' कैवल्य' का अद्वैत सिद्धांत उजागर करते हैं जो कश्मीर के अद्वैत शैव दर्शन की विशेषता है। चन्द्रदेव शिव की स्तुति करते हुए कहते हैं:

जल-ज्योति-धरती-पवन-राग-बाग आदि में न केवल शिव भी है, अपितु शिव ही है, केवल शिव है। केवल, केवल, केवल शिव। यही केवल शैवागम दर्शन का कैवल्य (मोक्ष) है।

शनि द्वारा कृत स्तुति में सुझाव दिया गया हैं:

शिव शिव करियो जीता मरियो मन में फिरियो शिव स्मरण।

सब के ऊपर शंभू है सार
न रहे दुख-सुख न संसार
न रहे काया-माया न हि धन
मन में फिरियो शिव-स्मरण।

सारे देवी-देवता शिव की स्तुति करते हुए उसे महादेव, देवाधिदेव बताकर उनसे क्षमा-याचना करते हैं :-

क्यों न करियो छिमा महेश्वर ईश्वर
शिव शंकर हम सब हैं उदास
सब बनावट तुम्हीं ने बनाया
संसार का और इस माया का

ऐसी माया में हमको फँसाया
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

पार्वती शिव के प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार शिव को हो परमतत्त्व मानती है:-

वही है शिव जी एक ही एक, एक को दो जानना नहीं ठीक।।

सामान्य विश्वास के अनुसार शिव आशुतोषं माने जाते हैं। शीघ्र ही वे भक्तों पर प्रसन्न होकर वरदान दे डालते हैं। स्तुति करते हुए भक्तों पर कृपा करने में वे देर नहीं लगाते हैं :-

जब उनकी लीला को शिव जी ने समझा
हँस-हँस के बोला-आओ मेरे पास
न धन की चाहत है मुझको न कुछ भी
है पूरा मुझे अपनें भक्तों का भाव।।

इस औघड़ आशुतोष देव पर हिन्दी में अधिक नहीं लिखा गया है। इसका कारण हिन्दी भाषी प्रदेश का सांस्कृतिक परिवेश। शिव या तो दक्षिण भारत के हृदय पर छाये हैं या फिर पहाड़ों की चोटियों पर। हिन्दी साहित्य पनपा है मध्य देश में और मध्यदेश (मदेश)की भाषा रही-ह्निन्दी तथा उसकी उपभाषायें एवं बोलियाँ। इस दृष्टि से कश्मीर के कृष्णजू महाराज की हिन्दी रचनाओं का विशेष महत्त्व है।

शक्ति (देवी) विषयक हिन्दी रचनाओं में रामचन्द्र की चरणचन्द्रिका, गुरु गोबिन्द सिंह का चण्डी चरित्र तथा चण्डीचरित्र उक्ति-विलास, मनियार सिंह की सौन्दर्य लहरी, रूपनारायण पाण्डेय का भगवती-शतक जीवन लाल नागर का दुर्गाचरित्र, कुलपति मिश्र का दुर्गा-सप्तशती का भावानुवाद इस लेख के लेखक का दुर्गासप्तशती का पद्य रूपान्तर दुर्गाचरित तथा अन्य छोटे-छोटे स्तोत्र पाये जाते हैं। शक्ति-विषयक हिन्दी रचनाओं में चरण-चन्द्रिका, मनियार सिंह की

सौन्दर्य-लहरी में देवी के सौन्दर्य-वर्णन पर पर्याप्त बल दिया गया है। कुलपति मिश्र की रचना में तो देवी के रूपवर्णन में कवि सीमा लाँघता दृष्टिगत होता है। उदाहरणार्थ लक्ष्मी के रूप-चित्रण का एक उदाहरण प्रस्तुत है:-

धनु मैंन मौंहे शर हैं कटाक्ष।
वरु नीति मैन छवि के गवाक्ष।।
तिल कुसुम नाक शोभा अतुल।
तसु खास वास पूजे न फूल।।
शशिभाल शक्ति मंजरी हाथ।
निवि कमल कुन्त शुभकरनि साथ।।
दृग तीन नलिन फूले सुदेश।
उर पीन उरज उन्मत सुदेश।।

भगवती-शतक, शिवा-शतक चण्डी-चरित्र तथा चण्डी-चरित्र-उक्ति-विलास में भगवतीं की दिव्य शक्ति वर्णित है, रूप-वर्णन गौण विषय है। देवी विषयक उक्त हिन्दी रचनाओं में देवी भक्तिधारा भक्ति साहित्य का एक क्षीण स्रोत ही प्रवाहित हो पाया है।

कृष्ण जू महाराज की देवी भक्ति विषयक रचना हिन्दी में दृष्टिगत नहीं हुई है। वस्तुतः शैव दर्शन में शिव से भिन्न शक्ति का कोई भिन्न रूप माना भी नहीं जाता है। शिव के बिना शक्ति और शक्ति के बिना शिव का अस्तित्व शैव मानते ही नहीं। यथा

न शिवेन विना देवी न च देव्या विना शिवः
नानयोरन्तरं मन्ये चन्द - चन्द्रिकयोरिव।।

शिव के बिना देवी और देवी के बिना शिव नहीं। इनमें उसी तरह कोई अन्तर नहीं है जैसे चाँद और चाँदनी में नहीं है। शिव-स्तुति में शक्ति-स्तुति समाविष्ट है।

कृष्ण जू महाराज की भाषा है तो हिन्दी; किन्तु उसके पहले सधुक्कड़ी शब्द जोड़ दें तो उसका उपयुक्त स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। उनकी भाषा में कबीर की भाषा-शैली का अक्खड़पन है। कबीर ने तो कभी कभी पूर्वी हिन्दी, ब्रज आदि का सुलम्मा भी चड़ाया है, किन्तु इनकी भाषा सर्वथा टकसाली है जैसे

पथर (पत्थर) से जिस तरह मिलता है सोना
उस तरह होना तुम्हारा उसके साथ
समझ में आता है कर्मों का फेरा
किस पर लगा है तेरा दिल।।

फारसी, अरबी के शब्दों का भी कहीं-कहीं प्रयोग मिलता है। कुछ भजनों में तो फारसी इस तरह प्रयुक्त हुई है जैसे संस्कृत की शब्दावली। यथा

हम से मोहन नाथ ने अब कैसा किया काम।
होश लिए पीने दिया बेखुदी का जाम।।
दिल लिया दिलबर ने हमको कुछ न दिया दाम।
हमनें आप ही तख्त छोड़ा भक्त है बदनाम।।

कृष्ण जू राजदान प्रतिभा-सम्पन्न जन्मजात कवि रहे। उन्हें भक्ति की नशे में गीतों तथा छन्दबद्ध रचना की खुमारी चढ़ जाती रही। ऐसी अवस्था में भाव तो बेभाव निकल आते हैं। कला का परिमार्जित रूप उपेक्षित रह जाता है। फलतः कबीर की सी काव्य-शैली पर उनकी विनम्र वाणी में ऊट पटांग व्याकरणासम्मत छन्दोभंग-शब्दावली प्रवाहित होने लगती है और इस तरह जितना ही भाषा-प्रवाह विघ्नान्तरित होता है उतना ही भाव-भंगिमा की तीव्रता हृदयगम्य होकर तरङ्गित करने लग जाती है। हिन्दी भजनों में वे उतना नहीं खुल पाते जितना कश्मीरी रचनाओं में। वहाँ प्रतीकों और रूपकों का जमघट उनकी

भाषा को पागल-प्रलाप की शैली में आध्यात्मिक नशे का एक उत्तम नमूना बना कर प्रस्तुत करता है।

हिन्दी भजनों के इस लघु संग्रह में मैंने अपनी ओर से भाषा-शुद्धि, छान्दस संशोधन तथा शैली-परिमार्जन का दुस्साहस न कर यथोपलब्ध रूप को प्रस्तुत किया है; ताकि पाठक को श्री कृष्ण जू राजदान के हृदय का अकृत्रिम परिचय मिल सके। मैंने यह प्रयास श्री कृष्ण जू राजदान के प्रपौत्र श्री भूषण लाल राजदान के आग्रह पर उनकी उद्दाम आकांक्षा को पूर्ण करने के लिए किया है। अतः इसका सारा श्रेय उन्हीं को जाता है। अपने पितरों के प्रति उनकी श्रद्धा तथा उससे प्रेरित उनके प्रयास सर्वथा स्तुत्य एवं उदाहरणीय हैं; एतदर्थ वे प्रशंसा-भाजन हैं।

विनीत - मथुरादत्त पाण्डेय

❊ ❊ ❊

शिव भजन

अरे किस राजा की राजकुमारी
किस पर लगा है तेरा दिल!

जिसकी चाहत है तेरे मन में
उसका बन में रहना है
उस पास साधु संतों का डेरा
किस पर लगा है तेरा दिल ॥

नंगे सिर और नंगे पाँव
निष्काम निष्कल सुनाऊँ मैं क्या
न पल्ले है पैसा न आटे का सेरा
किस पर लगा है तेरा दिल॥

पी पी के गाँजा आँखें जो फेरता
डरंता है उस से यम और काल
घर अपने जाओ तू समझो मेरा
किस पर लगा है तेरा दिल॥

बिजली-सी तू है चमकती दमकती
बादल का रखती है मन में हवस
यही है प्रलय और यही है अंधेरा
किस पर लगा है तेरा दिल॥

पत्थर से जिस तरह मिलता है सोना
उस तरह होना तुम्हारा उसके साथ
समझ में आता है कर्मों का फेरा
किस पर लगा है तेरा दिल।।

राम-राम करके आसन बिछाओ
श्याम रूप का मन में लगाओ ध्यान
उस पास लक्ष्मी और माया का ढेरा
किस पर लगा है तेरा दिल।।

कृष्ण जी तू मत माँग धन और माया
उसी शिव जी ने बनाया यह रूप
उस का भजन कर साँझ और सवेरा
किस पर लगा है तेरा दिल।।

***

भगवान विष्णु द्वारा शिव जी महाराज की स्तुति

कानों में तुरके हाथों त्रिशूला, कण्ठे में वासुकि पायो रे।
पाँव को पदमों का कीता बिछोना, बृषभ का आसन बनायो रे।।

कर्पूर गौरं[1] निर्मल तन को, गेरू का लेप लगायो रे।
तेरे आगे संतों का घेरा, आयो रे जोगी आयो रे।।

तेरे मुँह पर ज्योति की सूरत, दाँतों की मूरत तारा है।
भगतों के घर में संसार सारा, सारा भोजन खायो रे।।

पूजा तेरी करूँ नित सवेरे, प्रेम के फूल चढ़ाऊँ रे।
घंटा का मुरली का बाजे का बजना, शंखों का शब्द सुनायो रे।।

मन में चिंतन करता रहूँगा, शिव चरणों का करूँगा मैं ध्यान।
फूलों से अरघ्यों से माथे पै तेरे, चंदन का तिलक लगायो रे।।

सोने को चिन्तामणि का बिछौना, उस पर तुम्हारा सोना रे।
गौरी शंकर हर गंगा धर, आवाहन पर जगायो रे।।

कँवल से कलेजे में तेरा ठिकाना, बुद्धि से तुझे पहचाना रे।
अवस्था त्रयी में सारा ज़माना, मुझे अपने पास बुलायो रे।।

---

1. ये दो शब्द 'कर्पूर गौरं' संस्कृति की स्तुति से लिये गये हैं, अर्थ है - कपूर के समान गोरे।

बिना तेरे दर्शन के जलना जिगर का, कभी तेरा स्मरण न होवे भूल।
खड़ा है मेरे पाप काँटों का जाड़ा, दया के अगन से जलायो रे।।

न हूँ साधु गाँजे का नशा बनाओं, फंसा हूँ गृहस्थ के जंजाल में।
अब मिलेगी ठंडाई और ध्यान का गाँजा, बहुत चैन से आ पिलायो रे।।

दिन रात तेरी है चाहत मुझको, राहत है इस कर्म-भूमि में।
कृष्ण जी सुनियेगा मुरली में लीला, मीठी ज़बान में सुनायो रे।।

❊ ❊ ❊

इंद्र देव की शिव-स्तुति

धारना में तुम्हारा ध्यान धारों प्यारा
ओम गंगा धारा जी संसार सारा

ओम हर शंभू तुम हो स्थावर जंगम
नमस्ते साधुओं का संगम शिव नमस्ते
ओम गंगा धारा जी संसार सारा

महाशक्ति का ताज रे त्रिभुवन राजा
तेरे सिर पर ऐसा शिव तेरे सिर पर ऐसा
लाख सूरज का रूप और तेज होवे जैसा
तुम हो सब के तन में तेरा स्मरण
मन में रखों रात और दिन
ओम गंगा धारा जी संसार सारा

तेरी माया शिव जी कब बुद्धि में आये
शिव शिव जी कब आवे
विष्णु, ब्रह्मा, देवता और सरस्वती न पावे
ओम गंगा धारा जी संसार सारा

चरणों का स्मरण चाहते हैं हम प्यारे
शिव जी चाहते हैं हम प्यारे
परम शक्ति के लिए तुम में बिन्दु पर ओम्कार के
ओम गंगा धारा जी संसार सारा

एक दिन यह भ्रम पुरी छोड़ कर चलते हैं हम
शिव जी छोड़ कर चलते हैं हम
आपके उपकार से मुझ पर न पावे हाथ यम
ओम गंगा धारा जी संसार सारा

कृष्ण जी के मन में अपने चरणों का
ध्यान बना रखना ध्यान बना रखना
आप का स्मरण जपे जब तक है उस के घट में प्राण
ओम गंगा धारा जी संसार सारा

❋❋❋

1. ढेर (बहुत अधिक)

चित्रगुप्त की शिव-स्तुति

ध्यान से दयावान भगवान पाइए
आइए सदा शिव आइये जी।।

शिव का ध्यान अपने मन में लगाइये
विष्णु का ब्रह्मा का शंभू है सार
उस शंभू को रागों में गाइये
आइये सदा शिव आइये जी।।

पूजा के वास्ते धर्म कर्म चाहिये
शिव नाथ के लिये उठ के प्रभात
फूले फूल आनन्द से ले आइये
आइये सदा शिव आइये जी।।

हे कृष्ण तू छोड़ अहंकारी
गंगा धारी है सर्वव्यापक
समझने में प्राण और आत्मा लगाइये
आइये सदा शिव आइये जी।।

***

चंद्रमा की शिव-स्तुति

मैं तेरे मन में तू मेरे मन में,
हे केवल, हे केवल, हे केवल जी ।।

घर में बाहर में, बस्ती में बन में, कुमरी[1] में ज़ाग[2] में, लाले में दाग में
बाग में राग में अशजार[3] में, सुंबल[4] और सुमन में बुलबुल और चमन में

आत्मा है आकाश में और प्रकाश में, अरे प्राण अन्तवान तेरा नाम
जल में जोत में, धरती में पवन में, हे केवल, हे केवल, हे केवल जी।।

शंभू में, विष्णु में, ब्रह्मा में, नारद में और इंद्र प्रजापति में
सूरज में चाँद में अगन[5] में पवन में, हे केवल, हे केवल, हे केवल जी

गोविन्द आप हैं आनन्द आप हैं, दानन्द[6] आप है शनवन्द[7] आप हैं
आप ही आप हैं तीनों भुवन में, हे केवल, हें केवल, हे केवल जी।।

जोगी में आप हैं सन्यासी में आप हैं, संसारी में आप हैं, ब्रह्मचारी में आप हैं
एक ही एक है चारों वर्ण में, हे केवल, हे केवल, हे केवल जी।।

कृष्ण जी को एक आकांक्षा है मन में, हर दम रखो उस को ध्यान अपना याद
शाम में प्रभात में रात में दिन में, हे केवल, हे केवल, हे केवल जी।।

❋ ❋ ❋

---

1. कोयल 2. कौवा 3. शाखा 4. जटामासी (एक औषधि) 5. अग्नि 6. विशुद्ध आनंद। शनिश्चरी अमावस्या से पहले के तेरह दिनों के मध्यस्थ नक्षत्रों का कष्ट-दायक योग। (शनिबन्ध)

शनि देव की
शिव-स्तुति

शिव शिव करियो जीता मरियो
मन में फिरियो शिव स्मरण
शिव शिव कर के दिन रात भरियो
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

मन के शिव शिवाले में जायियो
उस में पायियो शिव केशव
उस शिव जी को करियो प्रदक्षिणा
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

जै शिव ओम्कार शंभो बोलियो
मन से खोलो दुख के बंध
चित्त, बुद्धि, मन, प्राण करियो अर्पण
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

संसार झूठा है इस को त्यागो
कब पाओगे जन्म ब्राहमन
अब मत भूलो जाता है दिन दिन
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

माया की नींद से जागो जागो
भागो भागो काया से दूर
वखरा रखियो ध्यान से तन मन
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

त्यागी निकलो बिल्कुल घर से
वैरागी हो हर से मिलन
सन्यास आस पास धारो बन में
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

सब के ऊपर शंभू है सार
न रहे दुख सुख न संसार
न रहे काया माया नहि धन
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

परमात्मा है अपने पास
हे कृष्ण जी तुम कर अभ्यास
उस का नाम है पूरक पूर्ण
मन में फिरियो शिव स्मरण।।

***

सब देवताओं द्वारा
शिव स्तुति

क्यों न करियो दया, दया सागर हर
गंगाधर, देवता हैं उदास।।
क्यों न करियो छिमा[1] महेश्वर ईश्वर
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

सब बनावट तुम ही ने बनाया
संसार का और इस माया का
ऐसी माया में हम को फंसाया
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

तुमने हमें व्यवहार में लाया
वह माया क्या खुश आया
कुछ नहीं आता हमें, तुझ को लजाया
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

ईश्वर का वेष तुम ने सजाया
तुमने ही हमको भगत बनाया
काहे को अब मुख पे क्रोध चढ़ाया
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

1. क्षमा

जो भी कहिया सो तुमने कीता[1]
प्रजापति को मोह दित्ता[2]
तब सभी देवतों ने लीला कीता
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

तुम ही मन प्राण हैं, तुम ही चिन्ता
तुम ही ईश्वर और आत्मा
जोत जोत नाम देते तुमको देवता
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

तेरे वास्ते कीता घमण्डा
हमने आप लयी छोड़ा डण्डा
नीलकण्ठा अब हो ठण्डा ठण्डा
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

सब के मन में तेरा बसना
त़द जूँ तूँ तुम को दसना[3]
पहले क्रोध और पीछे हँसना
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

1. किया (पं.) 2. दिया (पं.) 3. कहना (पं.)

आप दया और कृपा कर आओ
आनंद से निज मुख दिखलाओ
इतना इतना मत झुँझलाओ
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

जो कुछ आया माड़ा[1] हम से
क्षमा का आसरा है तुम से
हम कों छुड़ाओ दुख और गम से
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

संसार मुख से हम को बचाओ
कृष्ण जी बख्शा दो धैर्य
जल्दी शिव-लोक में पहुंचा दो
शिव शंकर हम सब हैं उदास।।

❋❋❋

1. बुरा

शिव जी महाराज का प्रसन्न होकर उत्तर देना

जब उनकी लीला को शिव जी ने समझा
हँस हँस के बोले आओ मेरे पास

न धन की चाहत है मुझको न कुछ भी
है पूरा मुझे अपने भक्तों का भाव

दिन दिन इसी तरह लीला सुना दो
इच्छा है न खाने की पीने की मुझको

न यज्ञों में आने और जाने का शौक
मैं चाहता हूँ भक्ती भक्ती बना दो

मेरे मन में कोई रंजिश कहाँ है
लेकिन वहाँ है जहाँ है न भाव

अब भावना से आनन्द में जाओ
कृष्ण जी तू शिव जी की लीला को गाओ

ईश्वर करेगा तुझ पर दया
तू मन ही मन में अलख तो जगाओ

***

शिव जी का प्रसन्न होना और दक्ष प्रजापति द्वारा यज्ञ करना

राज़न येलि वॅन्ज लीला स्वंदर प्रसन्न सॉंपन शिव शंकर[1]
यज्ञस प्यठ गयि सॅमिथ सॉरी शॅमिथ कॅरहस आर ज़ॉरी[2]
शिव ध्यान धोरुख हृदयस अंदर प्रसन्न सॉंपुन शिव शंकर[3]
होम करवाया दक्षिन का राजा घंटा शंख और बाजा नाल
तृप्त गयि दिवता ख्वश गौ ईश्वर प्रसन्न सॉंपुन शिव शंकर[4]
लाखों चीजों को अग्न में डाला सावधान करवाया जगन्नाथ
त्रेलोक नाथ ईश्वर परमेश्वर प्रसन्न सॉंपुन शिव शंकर
कोप हटा गई मन की चिंता आग से यज्ञ पुरुष निकला
ताज आव सॉमियस निश नन्दकीश्वर प्रसन्न सॉंपुन शिव शंकर[5]
अर्ज़ करता हूँ त्रिभुवन सारा जाने की वेला है नज़दीक अब
सब को रुख्सत करना है बेहतर प्रसन्न सॉंपुन शिव शंकर
महादेव ने फिर फिर बोला सब जावोगे आनंद नाल[6]
जाते हैं हम भी कैलास के ऊपर प्रसन्न सॉंपुन शिव शंकर
दुख छोड़ के रखो आनन्द नाल्य कृष्ण जी का रक्षपाल्य कर
दिखाव उस को अपना रूप दिगम्बर प्रसन्न सॉंपुन शिव शंकर

❋❋❋

---

1. राजा ने जब सुदर लीला सुनाई तो शिव शंकर प्रसन्न हुए।
2. यज्ञ पर आये हुए सभी देवताओं ने डरते डरते आराधना की।
3. शिवजी का ध्यान धारण किया तो शिव शंकर प्रसन्न हुए।
4. देवता तृप्त हुए, ईश्वर प्रसन्न हुआ तो शिव शंकर प्रसन्न हुए।
5. इतने में नन्दकेश्वर अपने स्वामी के पास आए तो शिव शंकर प्रसन्न हुए।
6. साथ (सहित)

नारद जी का
शंभू महाराज के सामने गाना

जगन्नाथ जग से किनारें गयो रे
किनारे गयो रे क्वहसार[1] गयो रे।

माया छोड़ के उजाड़ गयो रे
उजाड़ गयो रे पहाड़ गयो रे।

बृषभ के ऊपर सवार गयो रे
सवार गयो रे सर्वसार गयो रे।

कश्मीर के शालमार गयो रे
देखने बाग और बहार गयो रे।

अमर नाथ जी के गार गयो रे
करते कौन कारोबार गयो रे।

दुखड़ा किस के नाल गयो रे
चिदाकाश और पाताल गयो रे।

नगसा और ताल गयो रे
रक्षपाल करते हीमाल गयो रे।

---

1. पर्वत

आस पास हरमुख वास गयो रे
अरे जोगी जी सन्यास गयो रे।

मुक्त करने कृष्ण दास गयो रे
उस को दर्शन देने उसके पास गयो रे।

❋❋❋

शिव-भजन

काल के दण्ड से हम को बचाओ शिव जी दिखाओ शांति स्वरूप
झूठ कहने की ताकत न रखो नित्य रखो हमको उत्तम विशेष

सत चित आनन्द गण[1] बनाओ शिव जी दिखाओ शांति स्वरूप
अंधकार रूपी शत्रु हटाओ चित बुद्धि बनाओ गौरी गणेश

शांती की काशी में बसाओ शिव जी दिखाओ शांति स्वरूप
घर का राग-द्वेष हटाओ कुछ मत रखो वासना की लीश

शांति करके एकांत में पहुँचाओ शिव जी दिखाओ शांति स्वरूप
चित स्फुरणा परं शम में डुबाओ अचित बनाओ वह है उपदेश

निर्वासन आसन पर बिठाओ शिव जी दिखाओ शांति स्वरूप
माया की वार्ता सब समझाओ जब कुछ नहीं तो क्यों है राग द्वेष।

***

1. घन (बादल)

पार्वती माता की स्तुति

ढूँढा ढूँढा घर से निकाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जिसने तन को चिट्टा है रंगा
नंगे सिर से बहती है गंगा
जो है बृषभ पर चढ़ने वाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जिसने रूप अपना साधू बनाया
साधू बन के भस्मा चढ़ाया
जिस के कंठे में नागों की माला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जिस ने माथे पर चंदन लगाया
हाथों त्रिशूल और पदम पाया
बान्धा कन्धे पर मृग की छाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जो है मुख पे भभूत मलता
जोगी बन कर बन बन है चलता
जो है माया से अलग निराला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जिस की जटा है कुका[1] सारा
दाँतों हँसते हैं नभ के तारा
आँखें लाल थोड़ा सा काला
डाला डाला जंगल में मुझ को

कानों मुद्रा सूरत ऐसा
आवे कहने में वैसा न जैसा
करने वाला जगत का पाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जो है मुँह से मीठा बोलता
मीठा बोल के शक्कर है घोलता
जिस का कहना है अमृत का प्याला
डाला डाला जंगल में मुझ को

ऐसा मगन और होश्यार होता
होता होता कभी न सोता
सीधा सादा भोला भाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जिस को सम है देना न देना
एक ही कीमत में मिट्टी और सोना
भोजपत्र और जोड़ा दुशाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

1. उलझी

जिसका नाम है परमेश्वर हर
जिस का नाम है शंकर ईश्वर
महादेव और महाकाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

जिस के हृदय में बसना न बसना
सुंदर मुख से हँसना और हँसना
जिस के ध्यान में पापों से टाला
डाला डाला जंगल में मुझ को

कृष्ण जी को दर्शन देवे
दर्शन देकर शिव लोक में लेवे
उस का प्रेम है सब से दुबाला[1]
डाला डाला जंगल में मुझ को

❋❋❋

1. ज़्यादा, अधिक

पार्वती माता का साधुओं को समझाना

तप साध के कर निर्मल मन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है शिव जी एक ही एक
एक को दो जानना नहीं ठीक
झूठ बोल कर मत कपटी बन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है आत्मा वही है प्राण
वही है ब्रह्मा वही भगवान
वही है लक्ष्मी नारायण
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है सब जीवों का सार
वही है संसार का व्यवहार
वही है माया वही है धन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है नेढा वही आस पास
वही है जोगी वही सन्यास
वही है साधू वही वही सत्‌जन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है सूरज वही है चांद
उसी के पास देवता हाथ बाँध
वही त्रिलोक वही त्रिभुवन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है परम शिव परमानंद
वही है सार ओम्कार का बिन्द
वही है गुणवान वही निर्गुण
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है सर्व व्यापक हर जा पर
उसी का नाम है शिव शंकर
वही चार वेद और पांच कारण
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

ब्रह्मा बन के हंसासन
विष्णु जी बन के गरुड़ासन
वही वृषभासन त्रिलोचन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

वही है गुल और वही है खार
वही है बुलबुल वही गुलजार
वही है बाग और वही गुलशन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।

कृष्ण जी उस केवल का रूप
हृदय में जानो जैसे दीप
एक दिन दिखावे शुभ दर्शन
जाओ जाओ साधो दण्डक वन।।

❊❊❊

कृष्ण-लीला

श्याम वर्ण कमल चरण पदम नैन धारी
कृष्ण मुरारी प्यारो रे ।

दीनानाथ वीना शब्द से व्याधि के हारी
कृष्ण मुरारी प्यारो रे ।

सर्व व्याधि हारी सर्व अधिकारी
सर्व अधिकारी दोष निवारी
कृष्ण मुरारी प्यारो रे ।

प्यारे लाल समझो विनती हमारी
दिखलाओ अपनी गरुड़ सवारी
कृष्ण मुरारी प्यारो रे ।

और क्या मतलब मोर मुकुट धारी
नेरे[1] आओ बाल ब्रह्मचारी
कृष्ण मुरारी प्यारो रे ।

साधु संत बैरागी सब व्यवहारी
बारी बारी जमा होते जमना किनारे
कृष्ण मुरारी प्यारो रे ।

आते आते गाते गाते कृष्ण-गीत सुखकारी
कृष्ण मुरारी प्यारो रे।

❊❊❊

1. समीप

कृष्ण-भजन

काशी से कश्मीर मण्डल में आइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष[1]।।

मन मोहन के साथ भोजन खाइये
भिक्षकों को दीजिये ऐसी विशेष
सबको दुर्भिक्ष की नींद से जगाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

सब बाल ग्वाल गोपाल पाइये
शेष गणेश ईश ब्रह्मा महेश
ब्रज-वासियों का भक्ति योग गाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

मालिक होके स्वांग बनाइये
मोहन माया से है निर्लेश
आहुति देकर धोनी तपाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

जसोदा माता को विनती सुनाइये
धारण करके जोगन का वेष
भक्तान कृष्ण दर्शन का मंगाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

1. हवन से बचा भाग

गोप-गोपियों का हाल बतलाइये
उन को है भोग योग का उपदेश
साँवरी सूरत का ध्यान लगाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

अपने भक्तों का झट पट हटाइये
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-राग-द्वेष
कल माला से राक्षसों को डराइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

वृन्दावन से उतम पाइये
गिरिजा का घर है कश्मीर देश
उतर-वाहिनी[1] गंगा में नहाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

कु काल से हम को मत डराइये
चिटे चिटे बंगे[2] काले काले केश
बहु खातक[3] का शंख बजाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

कुमार जी को राजधानी में लाइये
गिरि धारी के साथ गौरी गणेश
भक्तों को भूखों को तृप्त फरमाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

1. उत्तर को बहने वाली, 2. बनेंगे, 3. घातक

स्वर्ग से विश्व कर्मा बुलाइये
भूमि पुत्र को दीजिये ब्रज-महेश
कश्यप की झोंपडी की मुरमत कराइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

कश्मीरियों को कहर से बचाइये
कृष्ण के मिटाइये संकट क्लेश
अन्न-पूर्णा का मुख दिखलाइये
गोकुल से लाइये शुद्ध हुत शेष।।

❋ ❋ ❋

क्या कहें अकरूर[1] जी ने कैसा किया काम

क्या कहें अकरूर जी ने कैसा किया काम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

ब्रजवासी हैं उदासी चशम तर है आम
रोते रोते राधा कहती सुबह हुआ शाम
ना इधर है ना उधर है फिर किधर है श्याम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

पारा करके वस्त्रों को तन से छोड़ूँ प्राण
इस्त्री जोगन बनोंगी फेंक दूँ सामान
नन्द नन्दन के लिये छोड़ों मैं नन्दन ग्राम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

फिरते हैं हम रात दिन यह कर्मों का है फेर
कृष्ण चंद्र जब मिलेंगें तब क्यों रहे अन्धेर
अब वह सूरज मुख दिखावे आता है पैगाम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

1. अक्रूर (श्रीकृष्ण को मथुरा ले जाने वाले)

प्रेम पानक पीने दिया होश ले लिया सब
सब कटुम्बा कबीला भूल गया है अब
बन गये हैं हम उदासी घर में है क्या काम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

गोपियों ने यह कहा है है गया मन थाम
हम गरीबों का वह लेवे अब न मुँह से नाम
वह है अब राजों का राजा हम है सब सुदाम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

जसुदा कहती थी मोहन हम से गया है हाय
मुझ बूढी माई को उसने छोड़ दिया है हाय
नूरे दीदा जाने से आंखें हुई बादाम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

हम यहाँ है वह वहाँ है फिर कहाँ है वह
बात सच है साथ उस के हैं जहाँ है वह
ऐसी ही दीवानगी का नाम परम धाम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

अजोध्या में थी खराबी कुछ नहीं आराम
सर्व मंगल ले गये जंगल गये श्री राम
सत् महल के कृष्ण हैं छत राम जी हैं बाम[1]
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

प्राण प्यारे जब न मिलें क्या करेंगे हम
खाने पीने के सिवा जीते मरेंगे हम
कृष्ण का है ऐसे प्रेम वालों को प्रणाम
श्री कृष्ण मथुरा गये हम से लिया आराम

❋❋❋

1. श्रीकृष्ण के लिए महल अच्छे हैं। राम के लिए उलटा है; वन अच्छा है।

हम है सुदामा कृष्ण मुरारी आयें तेरे दरबार में

तुम हो दाता हम भिखारी कैसी लाचारी नादारी।
सोचो हमारी अयाल बारी आयें तेरे दरबार में।।

दरया सा तेरा लंगर है जारी उसका करो हम को भण्डारी।
देखो हमारी दुनियादारी आयें तेरे दरबार में।।

भ्रम में फस गये हम संसारी तुम हो दयालु सर्व उपकारी।
इस नींद में बखशो अब बेदारी आयें तेरे दरबार में।।

ना हम जोगी ना ब्रह्माचारी ज्ञान के नाही अधिकारी।
भक्ती देवो वह है सरदारी आयें तेरे दरबार में।।

सब को किया तू ने सर्व अधिकारी अब आ गयी कृष्ण की बारी।
देखो दया की उमीदवारी आये तेरे दरबार में।।

❊❊❊

श्री कृष्ण-भजन

कृष्ण तेरे ध्यान में बन गया बॅस्ती को बन।
तुम हो मन और प्राण में ले मेरा अन्तः करण।।

क्यों न कहो तुम आना है क्यों न हो जाओ शरण
क्यों न वृती गोपियों से रास खेलोगे अभिन्न
तुम हो मन और प्राण में ले मेरा अन्तः करण।।

क्यों न कहों मैं सब तुम ही हो क्यों न रहों मैं मन मगन
कृष्ण भक्ती जमना जी में डुबाओ मेरा मन
तुम हो मन और प्राण में ले मेरा अन्तः करण।।

वृत्तियाँ हैं गोपियाँ तुम आत्म रूपी हो मोहन
आओ खाओ भाव का दूध और दही सजरा मखन
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

एक अनेक ठीक तुम हो तुम से ही तीनों भुवन
तुम ही हो पृथ्वी और जल पवन अगन और गगन
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

तुम ही साक्षात्कार हो और सत् चित आनन्द घन
मनन निदिध्यासन तुम करो सो अब मेरा श्रवन
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

क्यों न नारद जी बनूँ गाऊँ तेरा श्री कृष्ण गुण
शुक देव और व्यास बन के ध्यान धारों रात दिन
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

क्यों न त्यागूँ राज बनूँ भरत-सीता-लक्षमण
अंजनी नन्दन बनूँ गाता रहूँ श्री राम गुण
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

क्यों न बनूँ शिबरा[1] सुन लूँ तेरे मुख से श्रवन
जंगली मेवा खिलाऊँ तुम को हो जाऊँ शरण
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

क्यों न बनूँ कुबजा चंदन से मलूँ तेरी तन
क्यों न यह जो मैं ने बोला यह है भक्ती का लक्षन
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

क्यों न यह जो मैं ने कहा इस पर दया कर भगवन
मुझ को अर्जुन जान कर मेरे लिए विश्व रूप बन
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

पीते हैं अमृत की धारा धोते हैं तेरे चरण
तुम हो मोह माया से न्यारे हम तेरी आयें शरण
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरे अन्तः करण।।

हम नहीं कुछ तुम हो सब कुछ हम तुम्हारे भक्त जन
अब सुने संसार सारा कृष्ण का प्यारा-भजन
तुम हो मन और प्राण मैं ले मेरा अन्तः करण।।

❊ ❊ ❊

1. शवरी (भीलनी)

श्री कृष्ण-भजन

फँस गये मोह जाल में तेरी आये शरण
सार इस संसार में कुछ नहीं चंचल है मन

सुख नहीं अयाल में हैं हम उदासी रात दिन
हम हैं ऐसे हाल में शिव नाम तेरा दुख-हरण
सार इस संसार में कुछ नहीं चंचल हैं हम

क्या करे हम को अब काया और माया धन
हम को अब निष्कल बनाओ जल्दी आओ मनमोहन
सार इस संसार में कुछ नहीं चंचल हम

क्या बने देह चाल में अब दीजियो अनुग्रह-अन्न
गम नहीं कुकाल में हम करते हैं तेरा भजन
सार इस संसार में कुछ नहीं चंचल हैं हम

सब को अन्त काल उचित करो आनन्द गण
कृष्ण जी के हाल पर दयाल हो कृपाल बन
सार इस संसार में कुछ नहीं चंचल हैं हम

❋❋❋

श्री कृष्ण-भजन

कृष्ण तुमको मैं यह विनती करता हूँ बारंबार
मुझ को शांति देवो लेवो भौ-सागर से पार।

धन का प्रिय है मन चंचल बन गये दुनिया दार
पीछे साथी कोई न आवे केवल तुम हो यार
काया माया सब है नाशी भ्रम है यह संसार
मुझ को शांति देवो लेवो भव सागर से पार।

सब प्राणों से तुम प्यारे हो सब प्यारों से प्यार
जो कुछ यह तुम हो सारा हो तुम को जै जै कार
अन्तः करणों से नेडे[1] हो निर्मल निर्विकार
मुझको शांति देवो लेवो भव सागर से पार।

तेरे मिलने की चाहत है और कुछ नहीं दरकार
सब कामों में राहत देवो पाया तेरा दरबार
कथा-श्रवण में सुख बखशो मिथ्या है परिवार
मुझ को शांति देवो लेवो भव सागर से पार।

---

1. समीप

नित है शुद्ध चित्त वृत है परम आकार
उनकी संगत की बरकत से हम हुये हैं उद्धार
साडे मुख से सब जीवों को पहुँचावो उपकार
मुझ को शांति देवो लेवो भवसागर से पार।

ऐसी आत्म-स्मरति[1] देवो जिससे हो उद्धार
संतों साधुओं का बनाओ प्रेमी सेवा कार
मुझको शांति देवो लेवो भव सागर से पार।

❋❋❋

1. स्मृति

कृष्ण-भजन

राधे श्याम हरे कृष्ण हरे प्रभू गोपाल
गोपी नाथ माखन चोर मदन-मोहन लाल

मेरा मन जमना जी वृत्तियाँ हैं गोप ग्वाल
वह है प्रेम अमृत रूपी जल से मालामाल
उस में नहाव खेल मनाव बालकपन की चाल
गोपी नाथ माखन चोर मदन-मोहन लाल

देह भ्रम रूपी शेर के हैं मद से आँखें लाल
उसको पकड़ो खेंचो बांधो मारो उतारो खाल
उस सिंहासन के ऊपर अपना आसन डाल
गोपी नाथ माखन चोर मदन-मोहन लाल

हम तुम पर अर्पण करते हैं तन मन अन्न धन माल
सब प्राणों से तुम प्यारे हो न्यारा हुआ काल
हम को मोह से मद से भ्रम से दुख से गम से टाल
गोपी नाथ माखन चोर मदन-मोहन लाल

क्या करे हम को मथुरा काशी श्री गोकुल ब्रज नैपाल
साडी[1] चित्त नगरी में बसियो तुम दीन दयाल
भक्तों का तुम पालन वाला तीनों जगत का पाल
गोपी नाथ माखन चोर मदन-मोहन लाल

हम गृहस्थ में फँस गये हैं काटो माया-जाल
केवल तुम्हारा आसरा है देखो हमारा हाल
कृष्ण को शुभ दर्शन देवो लेवो अपने नाल
गोपी नाथ माखन चोर मदन-मोहन लाल

❋❋❋

1. हमारी

कृष्ण-भजन

मथुरा से वृन्दावन में आया राधा ने पाया मन-मोहन।
गोपियों के भक्ति-भाव ने सिर उठाया राधा ने पाया मन-मोहन।।

मीठा मीठा मखन जसुदा ने लाया मोहन ने खाया भावना से।
सब गोपियों ने भी उस को खिलाया राधा ने पाया मन मोहन।।

गोपों ग्वालों ने धूम मचाया आगया गोकुल में गोपी नाथ।
अपने बाल बचों[1] को बुलवाया राधा ने पाया मन-मोहन।।

कृष्ण चँद्र का सूरज मुख चूमा चंद्रा तो रात दिन घूमा था।
ललिता ने छाती से अपनी लगाया राधा ने पाया मन-मोहन।।

कैसी कैसी आपदा उस ने हटाया दैत्यों के दुख से बचाया देश।
ब्रज-वासियों ने कृष्ण-गीत गाया राधा ने पाया मन-मोहन।।

अर्पन करते हैं प्राण और काया अन्न-धन-मन-मोह-माया के साथ।
तुम हो सूरज हम हैं छाया राधा ने पाया मन-मोहन।।

---

1. बच्चों

तीनों लोकों में चर्चा थी घर-घर शंकर बन गया गोपेश्वर।
रास में कैसे उल्लास बनाया राधा ने पाया मन-मोहन।।

कृष्ण ने राम भक्तों को समझाया राम है कृष्ण कृष्ण है शंकर।
राग में त्याग का गुल दिखलाया राधा ने पाया मन मोहन।।

कृष्ण कहता है हैं फस गये हम आगया भ्रम अब कहाँ शम-दम।
आप ही हमें करें निर्माया[1] राधा ने पाया मन मोहन।।

❊ ❊ ❊

1. माया मोह से मुक्त (निर्माय)

कृष्ण-भजन

सबों को ले गया तन-मन जो मोहन हो तो ऐसा हो
हुआ वैकुंठ वृन्दावन जो नंदन हो तो ऐसा हो
वही निर्मल वही निर्गुण निरंजन हो तो ऐसा हो
ब्रह्म आनन्द गण[1] पूरण सुदर्शन हो तो ऐसा हो
हुआ गोकुल से जब जाना बहाना हो तो ऐसा हो
कंस ने काल तब माना जो होना हो तो ऐसा हो
हिलाना कोह खुश आना उठाना हो तो ऐसा हो
इंद्र ने तब ब्रह्म जाना दिखाना हो तो ऐसा हो
शक्ति मालूम हो जाना निशाना हो तो ऐसा हो
ब्रह्मा का गोप-गुण गाना सियाना[2] हो तो ऐसा हो
सुदाम यारे नौ[3] पाना पुराना हो तो ऐसा हो
विभूती घर में ले आना कमाना हो तो ऐसा हो
कई दिन कुल विद्या पाना जो दाना हो तो ऐसा हो
यह माया है वही सारा जो न्यारा हो तो ऐसा हो
जसोदा नन्द का प्यारा कँवारा हो तो ऐसा हो
लड़कपन में फिरा बन बन नज़ारा हो तो ऐसा हो
कराना शत्रु-क्षय अर्जुन सहारा हो तो ऐसा हो
कृष्ण चन्द्र उज्ज्वल रोशन सितारा हो तो ऐसा हो
हुआ वैकुण्ठ वृन्दावन जो नन्दन हो तो ऐसा हो

❊ ❊ ❊

1. धन, 2. सयाना (जानकार), 3. को

कृष्ण-भजन

जागो जागो श्याम सुन्दर योग-निद्रा से भोग-लक्ष्मी ने बुलाया है

आप मोहन को मनाया है उसने आइये बनसरी बजाइये आप
सोलह सिंगारों से राधा प्यारी ने सुन्दर बनाई काया है
उठो उठो श्रीधर मुरली मनोहर भक्तों ने तुझ को बुलाया है
जागो जागो श्याम सुन्दर योग निद्रा से भोग लक्ष्मी ने बुलाया है

महा माया में तुम निर्माया हो तुम सूरज पर छाया है
तेरे आने के लिये सब गोपियों ने धूम धाम धन धन मचाया है
कैसे कैसे रंग से अछा[1] बिछौना रेशम और शाल से सजाया है
जागो जागो श्याम सुन्दर योग निद्रा से भोग लक्ष्मी ने बुलाया है

यंद्रावती[2] ने चंद्रावती की गम की घटा को हटाया है
ब्रह्मा ने देवलोक ब्रह्मलोक विष्णुलोक सब साथ आने लाया है
गोपीश्वर बनके शिव शंकर भी वेष बदल कर आया है
जागो जागो श्याम सुन्दर योग निद्रा से भोग लक्ष्मी ने बुलाया है

चित्त से, बुद्धि से, मन से, प्राण से आप का ध्यान लगाया है
जो कुछ था दुख-गम-मोह-माया-भ्रम वह सब हम ने मिटाया है
ललिता सखी ने रास मण्डल में क्या रचना बनाया है
सब सखियों को हमने समझाया कृष्ण ने गीत गाया है
जागो जागो श्याम सुंदर योग निद्रा से भोग लक्ष्मी ने बुलाया है

***

1. अच्छा, 2. इन्द्रावती

कृष्णा-भजन

भ्रम मस[1] पी के मस्त हो गये हैं, फँस गये मोह जंजाल में
कहाँ चलिया तुम हम को छोड़ कर, श्री कृष्ण ऐसे हाल में

घर के कामों में राहत देवो, चित को कुछ नहीं चैन है
दुनिया दारी में है ख्वारी, कुछ सुख नहीं अयाल[2] में
कहाँ चलिया तुम हम को छोड कर, श्री कृष्ण ऐसे हाल में

हम को शांति शम दम देवो, पड़ गये हैं जंजाल में
कब है प्रसन्नता इस मन को, अन्न में धन में माल में
कहाँ चलिया तुम हम को छोड़ कर, श्री कृष्ण ऐसे हाल में

जिस को जितना है जंजाला, उस को उतना काला मुँह
सबसे रखो हम को नियारा, अचित अन्त काल में
कहाँ चलिया तुम हम को छोड़ कर, श्री कृष्ण ऐसे हाल में

चित बुद्धि में प्राण शांत बनाओ, एकान्त के खयाल में
ऊर्ध्व गति देकर अधोगति लेवो, मत मत रखो पाताल में
कहाँ चलिया तुम हम को छोड़ कर, श्री कृष्ण ऐसे हाल में

---

1. मय (शराब), 2. आलय (घर)

मेरे मन को शांती बखशो, फिर फिर के फिर फिरते हैं
अजोध्या, ब्रज, द्वारिका मथुरा, काशी में नैपाल में
कहाँ चलिया तुम हम को छोड़ कर, श्री कृष्ण ऐसे हाल में

टिकटिकी बाँध कर आखें रखो, श्री कृष्ण चन्द्र के ध्यान में
देह दृष्टि की चित मत रखो, मुझ चकोरा की चाल में
कहाँ चलिया तुम हम को छोड़ कर, श्री कृष्ण ऐसे हाल में

❋❋❋

श्रीराम भजन

भीलनी का जूठा मेवा राम जी ने खाया उत्तम पाया प्रेम से

भक्तों का प्रेम सब को दिखाया राम जी को किस चीज की है चाह
व्रतधारियों का संदेह मिटाया उत्तम पाया प्रेम से

राजधानी छोड़ कर बन में आया सच मान बाप की आज्ञा
ऐसा सत्व गुण देवतों ने गाया उत्तम पाया प्रेम से

दशरथ ने सब भेज कर मँगाया राम ने शहर आना न माना
बन गये माया में निर्माया उत्तम पाया प्रेम से

श्राद्ध किया पितरों का गंगा में नहाया आप ही हो के ब्रह्मावतार
हम को भी ऐसा करना फर्माया उत्तम पाया प्रेम से

लक्षमन भरत जी का प्रेम बढाया ऐसे ही भाई होने चाहियें
सुग्रीव को मित्र भाव दिखाया उत्तम पाया प्रेम से

प्यार से जटायन की काया जलाई सचे मार्ग से
धर्म पर चलना सबों को सिखाया उत्तम पाया प्रेम से

एक दम दुम से लंका जलाया कैसा था पुन्य साँस सेवा कार
राम जी को सीता का हाल समझाया उत्तम पाया प्रेम से

इंद्र जीत और रावण को उड़ाया दे गया विभीषण को लंका का राज
मन्दोदरी का पति बनाया उत्तम पाया प्रेम से

लंका जीत कर अजोध्या में आया सब को दिखाया श्री राम रूप
लोगों को परंधाम में पहुँचाया उत्तम पाया प्रेम से

कृष्ण ने द्वैत भाव मन से हटाया राम को जाना परमात्मा
राम का नाम ज्ञान योग में लाया उत्तम पाया प्रेम से

राम राम करके आसन बिछाया चित में लगाया राम का नाम
राम का नाम शिव शंकर को भाया उत्तम पाया प्रेम से

※※※

राम-भजन

अजोध्या में चलो देखो अजब कैसा तमाशा है
जिनो[1] इन्सान रीछों बन्दरों का खूब चर्चा है
शहे-खर-सान[2] शहे मेमोन[3] अंगद फोज खुद लेकर
हनुमानो विभीषण लक्ष्मणो श्री राम सीता है
अभी आये हैं लंका जीत कर और देख कर दशरत
प्यारे राम जी के सब को दर्शन की तमन्ना है
बरसते हैं फलक से फूल सीता राम के ऊपर
गुलों की देवतों के हाथ में एक एक माला है
ब्रह्म ने राम जी की तन में अपना जलवा दिखलाया
बिला शक राम जी में कुदरते कामिल हुवैयदा है
बिला शक मालिके कुल शकलि इनसान बन के आया है
नहीं इनसान नहीं है नूर यह नूरे तजल्ला[4] है
करे जो राम राम उस को मोक्ष धाम देता है
सबों ने राम जी के नाम से आराम पाया है
बगलगीरी[5] को आई हैं तीनों मादरान अपनी
शतुर्गण[6] और भरत कैकेयि सुमित्रा और कौशल्या है

1. भूत, 2. पत्थर की तरह पैर जमाने वाला बादशाह, 3. ईमानदारों का मुखिया, 4. दिव्य प्रकाश, 5. मिलना, 6. शत्रुघन

गुल अफशानी[1] को बैठे हैं सब लोग अपने बामे[2] पर
वह धन धन बाद मंगल का सदा कानों में आता है
ज़र अफशानी[3] से करते हैं दायियां जेबिदामान[4] पुर
रवान दरिया[5] हे रहमत[6] का बड़े दातों का दाता है

विश्वामित्रो वसिष्ठो व्यास शुकदेवो रक्षेश्वर सब
श्रवन में उनके गीता भागवत औ' राम-गाथा है

अभी श्री राम जी आवे पकड़ कर हाथ ले जावे
कृष्ण वनपुह के बन में इंतिजारे वक्त रहता है
अजोध्या में चलो देखो अजब कैसा तमाशा है

❋❋❋

1. पुष्प वर्षा, 2. छत, 3. सोना निछावर, 4. आँचल, 5. बहती नदी, 6. कृपा

कृष्ण भजन

छोड़ों परहेज़ संजीवन की दवा कर मुझ को
हिजर[1] का दर्द है मिलने की शिफा[2] कर मुझ को
नब्ज पर मेरे तुम अब दस्ते शिफा[3] अपना रख
जो है तलवासे[4] जिगर उस से रिहा कर मुझ को

बारो रहमत[5] से मुझे ले के दे लियाकत की बू
जिस्मो दिलो रूहो दिमागम चूँ सबा[6] कर मुझ को
मुझ को दरकार नहीं राज न यह तख्त न ताज
मैं हूँ मोहताजे शिफा[7] आज कृपा कर मुझ को

शत्रुओं ने मुझे बहुत तंग किया घेर लिया है
तुम हो विश्वसनीय मित्र इन से रिहा कर मुझ को
मैं हूँ रूहानी व जिस्मानी कसाफत[8] से अलील[9]
बिस्तरे गम से उठा कर सफा कर मुझ को

मैं हूँ कम बख्त मुझे आती है बहुत सख्ती पेश
ले खबर मेरी अब सब कष्ट दफा कर मुझ को
खाने पीने वह दे हुकम जो चाहों खाओं
क्यों रहों सुस्त रखो चुस्त बना कर मुझ को

मेरे खातिर का चमन राजे शुगुफता[10] होवे
एतिदाले[11] असर आबो हवा कर मुझ को

---

1. जुदाई, 2. इलाज, 3. इलाज करने वाला हाथ, 4. कसाले, 5. कृपा की वर्षा, 6. शीतलता, 7. कष्ट निवावक के लिए तरसना, 8. गन्दगी, 9. बीमार 10. खिला हुआ 11. अनुकूल

या मैं बेदार रहों बन्द करों या कि पढों
मेरे चित में रहो सब करना रवा कर मुझ को

जिन्दा दिल रखो वही जिन्दगी जावेद अस्त
ध्यान में मगण[1] रखो अमृत को पिला कर मुझ को
गुलशने खिदमति आज़ाद सबआन में चों सर्व[2]
रखो ईस्तादा बयक पाद[3] बसा कर मुझ को

दस्तो पावो हम याराने इरम[4] चूमों में
रखो सर सब्ज़ सुरुख[5] रोय[6]
सफरी जाम में है हुबे[7] वतन दामन गीर
शर्हार[8] आराम से मत कभी जुदा कर मुझ को

खाने पीने में और नेमते गोनागों[9] में
रखो हर दम 'त्वता' याद करा कर मुझ को
शरबते वस्ल[10] पिलाना कि सदा मस्त रहों
ज्ञान योग रस में पिला पास बुलाकर मुझ को

जे हवाओ हवस दहरो दिलम[11] सेर करो[12]
तारिक आज अफसरिये अरजो समाँ कर मुझ को [13]
मैं बिलकता हो नजर रख कर तेरे आने पर
आओ श्री कृष्ण अभी वादा वफा कर मुझ का

※※※

---

1. मग्न, 2. उपवन को बनाने में हर तरह युस्त, 3. एक पैरवर सिर, 4. जन्नत 5. आवाद, 6. बाग, 7. प्रेम 8 शहर यार? 9. अनंक तरह के 10. प्रेम मिलन, 11. दिल की दुनियां की तृष्णा, 12. निकाल दो, 13. धरती के मालिक को आसमान बनाकर मुक्त करो।

श्री कृष्ण-भजन

हम से मोहन नाथ ने अब कैसा किया काम
होश लिये पीने दिया बे खुदी[1] का जाम
दर्द-मन्दे-इश्क[2] को है क्या दवासे काम
नशय्ये शोकश[3] करे क्या रोगने बादाम
दिल लिया दिलबर ने हम को कुछ न दिया दाम
हम ने आप ही तख्त छोड़ा भक्त हैं बदनाम
हमने आप ही छोड़ा नाभस नंग[4] नाम
मुक्ति की चाहत नहीं है भक्त है निष्काम
जब लडकपन से निकाला आशिकों में नाम
तब गवाई बादशाही है गवाह है आम
श्री कृष्ण है आत्मा और मन श्री बलराम
मोह रूपी कंस मारा दिया सचा[5] पैगाम
मन है लक्ष्मण बुद्धि विभीषण आत्मा है राम
मोह का रावन जलद हटावे धर्म को प्रणाम
भावना का दूध था क्या पुक्ता था क्या खास
कृष्ण को हर जा मिला क्या शहर था क्या ग्राम

❋ ❋ ❋

1. आत्म-विस्मृति, 2. प्रेम पीड़ित, 3. शोक में डूबे को,
4. बाहरी आदर, 5. सच्चा

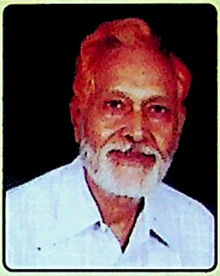

डॉ. मथुरादत्त पाण्डेय

राष्ट्रपति सम्मान-प्राप्त डॉ. मथुरादत्त पाण्डेय जी का जन्म 12 अगस्त, 1928 को उत्तराखण्ड के जिला अल्मोड़ा में हुआ। शास्त्री उपाधि प्राप्ति के पश्चात् आपने संस्कृत एवं हिन्दी में स्नातकोत्तर तथा पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त की। अध्यापन सेवा में प्रवक्ता एवं वरिष्ठ प्रवक्ता के रूप में कार्य कर आप प्राचार्य, पी.ई.एस.-1 के पद से सेवानिवृत हुए। इसके अतिरिक्त आपने कोलम्बो योजना के अन्तर्गत त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल तथा महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय, हालैण्ड में अतिथि आचार्य के रूप में कार्य किया। साथ ही विश्वेश्वरानन्द वेद शोध संस्थान, होशियारपुर में संयुक्त निदेशक के पद पर सेवा की। आपके 23 ग्रंथों में से 7 ग्रंथ संस्कृत में तथा शेष हिन्दी में है इनका 'शक्ति-विजयम्' नामक संस्कृत महाकाव्य इस समय छप रहा है। इनके अनेक शोध-लेख एवं पत्र प्रकाशित हुए। आपने संस्कृत ग्रन्थों के सूचीकरण, सम्पादन तथा हिंन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवाद का भी प्रशंसनीय कार्य किया। संस्कृत नाटकों के लेखन के साथ-साथ आपने नेपाल तथा भारत में इनका मंचन करवाया एवं कुछ नाटकों में अभिनय भी किया। पंचनदीय संस्कृत परिषद् के अध्यक्ष के नाते आपने पंजाब में सम्मेलनों, गोष्ठियों तथा अन्य गतिविधियों का संचालन किया। हिन्दी-संस्कृत भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए आप सतत् प्रयत्नशील हैं।